केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, दिल्ली

Central Board of Secondary Education, Delhi

Fictitious Roll No.
(To be entered by Board)

(परीक्षार्थी भरें To be filled in by the candidate)

परीक्षार्थी प्रश्न–पत्र के ऊपर लिखें कोड़ को दर्शाये गये बॉक्स में लिखें
Candidate should write code no. as written on the top of the question paper in this box ➡ 4/1

अतिरिक्त उत्तर–पुस्तिका (ओं) की संख्या
No. of supplementary answer-book (s) used ➡ Nil

परीक्षा का नाम Name of the examination AISSE

कक्षा Class Tenth

विषय Subject Hindi Course -B

परीक्षा का दिन एवं तिथि
Day & Date of the Examination Monday /04. 03. 2013

उत्तर देने का माध्यम Medium of answering the paper Hindi

किसी शारीरिक अक्षमता से प्रभावित हो तो सम्बन्धित वर्ग में ✓ का निशान लगायें

B	D	H	S	C

B = दृष्टिहीन, D =मूक व बधिर, H =शारीरिक रूप से विकलांग, S = स्पास्टिक, C = डिस्लेक्सिक
If Physically challenged, tick the category

खण्ड -क

1 - i) ग) पानी भरते

ii) घ) गीतों और मुकरियों के लिए।

iii) ख) चरखा चलाया

iv) क) पांनी पिलाने की

v) ग) कवि खुसरो

2 i) ग) विपदाओं और रुकावटों की

ii) घ) मानसिक सुख सब सुखों का आधार है।

iii) ख) दृढ़ निश्चयी बनने पर

iv) क) दर्द और आफ़त सहने की ताकत

v) घ) संकल्प शक्ति

3 i) ग) दुख - सुख सहने वाले

ii) ख) देशवासी दृढ़निश्चयी हैं।

iii) ग) भारतवासी मनोबल से युक्त मन के राजा हैं

iv) ख) मानवता की

v) ग) स्वतंत्र भारत

4 i) ख) शस्त्र लेकर सामना करने की।

ii) ग) क्रांति का

iii) घ) समय को अपने अनुकूल कर लेना।

iv) क) निर्बलों की सहायता में।

v) (घ) इतिहास

खण्ड-ख

5 क) i) पानी भरी सड़क → संज्ञा पदबंध

ii) जाता रहता था → क्रिया पदबंध

ख) i) वीर → गुणवाचक विशेषण, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ताकारक

ii) बनारस → व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग, कर्म कारक

iii) रहोगे → क्रिया, बहुवचन, ~~एक~~ ~~स्त्रीलिंग~~ पुल्लिंग ।

मिश्र वाक्य

ख) i) वह वैसे ही खेलता है जैसे कोच सीख देता है।

ii) इस घर में कुत्ते हैं इसलिए यहाँ आने में खतरा है।

ग) i) अध्यापक ने ~~हिंदी~~ हिन्दी पढ़ाई है।

ii) क्या आप ने खा लिया है?

iii) यहाँ केवल दो लोग रहते हैं।

7 क) चिकित्साध्यक्ष → चिकित्सा + अध्यक्ष
सर्वोत्कृष्ट → सर्व + उत्कृष्ट

ख) उप + अध्याय → उपाध्याय
लघु + आहार → ~~लध्वाव~~ लध्वाहार

8 क) देवलोक → देव के लिए लोक — संप्रदान तत्पुरुष

ख) खराब जो यश → अपयश — कर्मधारय समास

9 i) पहाड़ होना (बहुत बड़ा काम होना)
राम के लिए दसवीं की परीक्षा पास करना पहाड़ होने के समान है।

ii) जिगर के टुकड़े - टुकड़े होना (दिल टूट जाना)
जब माँ ने अपने बच्चे की दुर्घटना में हुई मौत के बारे में सुना तो उसके जिगर के टुकड़े - टुकड़े हो गये।

iii) अधजल गगरी छलकत जाए - थोड़ा धन या ज्ञान रखने वाला अधिक प्रदर्शन करता है।
हरिराम के पास ~~मुश्किल~~ से एक मुश्किल से एक ज़मीन का टुकड़ा है लेकिन अकड़ ऐसे दिखाता है जैसे पुरी गाँव की ज़मीन का मालिक हो इसे ही कहते हैं अधजल गगरी छलकत जाए।

iv) ऐरा -गैरा नत्थू खैरा - (कोई भी मामूली आदमी)
अगर अंग्रेजी इतनी आसान होती तो ऐरा -गैरा नत्थू खैरा सब अंग्रेजी के विद्वान होते।

10

खण्ड -ग

i) घ) छाया

ii) क) जेठ की भीषण गर्मी में

iii) ख) अपने घर में प्रवेश कर

iv) ग) सघन

v) ग) ब्रज

ख) जनरल साहिब के भाई के साथ कुत्ते का सबंध जानकर ओचुमेलाव के विचार और व्यवहार में ज़मीन और आसमान का अंतर आ गया। पहले ख्युक्रिन बेचारा, कुत्ते का मालिक दोषी तथा कुत्ता एक अवारा प्राणी था। लेकिन बाद में ख्युक्रिन बदमाश और ठग हो गया। कुत्ते का मालिक बिल्कुल निर्दोष हो गया और कुत्ता एक महँगा प्राणी और सुंदर सा 'डॉगी' बन गया।

क्यों → उसके व्यवहार में यह अंतर इसलिए आया क्योंकि वो अपने बड़े अफ़सर को खुश रखना चाहता था और दिखाना चाहता था कि वह उनका आज्ञाकारी और विश्वसनीय सेवक है।

ग) गाँधी जी के नेतृत्व में अद्भुत क्षमता थी। वे एक आदर्शवादी इंसान थे। उन्होंने कभी भी आदर्शों को व्यवहारिकता के नाम पर गिराने की कोशिश नहीं की। वे अपने व्यवहार को आदर्श के समान ऊँचा उठाते थे। उन्होंने न कभी स्वयं स्वार्थ सिद्ध किया न किसी दूसरे को ऐसा करने की प्रेरणा दी। वे जीवन भर अहिंसा और सच्चाई के मार्ग पर चलते रहे। परिणामस्वरूप लोग भी सत्य

का पथ चुनने के लिए तैयार हो गये। उनके इन्हीं गुणों की वजह से अनेक लोग उनके नेतृत्व में आगे बढ़ने लगे और उनका मार्गदर्शन चाहने लगे। इन्हीं गुणों से पता चलता है कि गाँधी जी के नेतृत्व में अद्भुत क्षमता थी।

12

मिट्टी से मिट्टी मिले खो के सभी निशान,
किसमें कितना कौन है कैसे हो पहचान।

इस उक्ति के माध्यम से बताया गया है कि मनुष्य और सभी प्राणियों का निर्माण इस मिट्टी से हुआ है। इस मिट्टी में कई प्रकार की मिट्टी मिली हुई है। इसका बोध किसी को नहीं है। इसी प्रकार किसी मनुष्य में कितनी मनुष्यता है और कितनी पशुता है किसी को नहीं पता। इसी प्रकार किसी पशु में कितनी मनुष्यता है या कितनी पशुता है किसी को ज्ञात नहीं है। इसलिए मनुष्य को चाहिए कि वह किसी पशु से अपने आप को बेहतर न समझे। जब नूह ने एक कुत्ते को दुत्कार दिया तो कुत्ते ने जवाब दिया कि न तुम अपनी मर्ज़ी से इंसान हो न मैं अपनी मर्ज़ी से कुत्ता हूँ। बनाने वाला तो सभी का एक ही है। इसलिए

हमें चाहिए कि हम किसी भी जीव को नीच न समझें।

13 क) लेखक ऐसा इसलिए कहता है क्योंकि सब चीजों के निर्माण के पीछे कोई न कोई महत्व ज़रूर है। इसलिए इन चीजों को भी संसार में बराबर की हिस्सेदारी बनती है क्योंकि इन चीज़ों का भी अपना महत्व है। इसलिए मानव को चाहिए कि वह अपनी कुटिल बुद्धि का उपयोग करके इन सब से इनके हक न छीने। पशु - पंछियों आदि को भी इस धरती पर उतना ही अधिकार है जितना मानव का।

ख) धरती की हिस्सेदारी में दीवारें मानव ने खड़ी कर दी हैं। मानव ने जड़ - चेतन की दीवारें खड़ी कर दी हैं। इसलिए उसने प्रकृति के जड़ तत्वों को महत्वहीन मानते हुए उनसे उनकी जगह छीन ली है जैसे समंदर की धरती छीनना, जंगलों को नष्ट करके बस्तियाँ बनाना आदि। मानव ने अपनी कुबुद्धि का प्रयोग करके भेदभाव की दीवारें खड़ी कर दी हैं।

ग) पहले सारा संसार एक होता था लेकिन अब भेदभाव पनपने के कारण धरती के टुकड़े - टुकड़े हो रहे हैं। जहाँ पहले आँगनों में जीवन बीतता था अब छोटे छोटे - छोटे जमीन के टुकड़ों पर गुज़ारा करना पड़ रहा है।

15 क) 'मधुर - मधुर मेरे दीपक जल' कविता में कवयित्री ने अपने प्रियतम को प्राप्त करने के लिए आस्था का दीपक जलाया है। वह अपनी आस्था रूपी दीपक को विहँस - विहँस जलने के लिए इसलिए कह रही है ताकि वह खुशी से, मानसिक उल्लास से जलता रहे और संसार के अन्य भक्तिशून्य प्राणियों को भी लौ भक्ति की लौ बाँटने में सहायक हो। वह चाहती है कि उसका आस्था रूपी दीपक अन्य भक्तिहीन लोगों को देखकर भी अपन प्रसन्नता से जलता रहे।

ग) 'कर चले हम फ़िदा' कविता में कवि देशवासियों से अपेक्षा रखता है कि वे धरती को दुल्हन मानकर उस पर फ़िदा हो जायें। दुश्मन के चुनौती देने पर खून की नदियाँ बहा दें। देशभक्ति का राह कभी भी देश भक्तों से वीरान न हो।

हाँ हमारे वीर सैनिक इन अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए

अपना तन-मन-धन न्यौछावर कर देते हैं। आज भी सीमाओं पर वे ठंड सहकर देश की रक्षा करते हैं। वे अपने सिर कटाकर हिमालय के शीश की रक्षा करते हैं तथा दुश्मन के चुनौती देने पर वे उन्हें लोहे के चने चबवा देते हैं।

घ) 'आत्मत्राण' कविता में चारों ओर से दुखों से घिरने पर कवि परमेश्वर में विश्वास करते हुए अपने आप से अपना बल-पौरुष को सहायक बनाए बनने की अपेक्षा करता है। वह चाहता है कि चाहे 'निखिल मही' उसके विरुद्ध हो जाए लेकिन उसका परमात्मा में विश्वास अडिग रहे। वह यह भी चाहता है कि वह आने वाली सब मुसीबतों को स्वस्थ मन से लाँघ सके। इसलिए कवि अपने मन को सुदृढ़ बनने की अपेक्षा करता है।

15 ख) टोपी ने एक दिन मुन्नी बाबू रहीम की दुकान पर कबाब खा रहे थे। टोपी ने मुन्नी बाबू को देख लिया। तो मुन्नी बाबू ने उसे एक इकन्नी रिश्वत

की दे दी और यह सच घरवालों से ~~छ~~ छुपाने के लिए कहा। टोपी ने मुन्नी बाबू की इस असलियत ~~को~~से घर के सभी सदस्यों को अनभिज्ञ रखा। ~~उन्होंने~~ टोपी ने यह सच इसलिए छुपाया क्योंकि वह किसी की तरह चुगलखोर नहीं था। वह अपने से बड़ों का आदर भी करता था। वह नहीं चाहता था कि मुन्नी बाबू घर जाकर डपट खाएँ। इसलिए उसने ~~ए~~ यह सच सबसे छुपा लिया।

क) टोपी के घर में सभी सुख-सुविधाएँ उपलब्ध थी पर उसका प्रिय दोस्त और दादी न ~~थ~~ थी। उसे अपनी दादी से तो बहुत नफरत थी। परंतु ~~इ~~ उसे इफ्फन की दादी से बेहद प्यार था। वह उसे कहानियाँ ~~इ~~ सुनाती थी। दोनों अधूरे थे, दोनों ने एक-दूसरे को पूरा किया था। दोनों प्यासे थे लेकिन दोनों ने एक-दूसरे की प्यास ~~बुझाइ~~ बुझाई थी। यह दादी का प्यार ही था जो ~~इ~~ टोपी को इफ्फन की हवेली की तरफ खींच लेता था। वास्तव ~~इ~~ में टोपी को इफ्फन के घर जाने से मनाही थी लेकिन ~~टो~~ इफ्फन से गहरी मित्रता और दादी की आत्मीयता ~~अ~~ उसे ~~क~~ इफ्फन की हवेली की तरफ खींच लेती थी।

16 मास्टर प्रीतम चंद का विद्यार्थियों को अनुशासित करने का तरीका बहुत क्रूर था। वह बच्चों को ठुड्डों से पीटा करता। कतार में सीधा न खड़ने पर खाल खींचने का प्रत्यक्ष करके दिखा देता था। वह बच्चों को मुर्गा मुर्गा भी बनाता था इतना ही नहीं वह चौथी कक्षा के बच्चों को मुर्गा बनकर पीठ ऊँची करने का आदेश भी दे देता था। लेकिन अ

किंतु आज की शिक्षा प्रणाली में यह यातना उचित नहीं समझी जाती। जो शिक्षा डंडे के डर से प्राप्त की जाती है वह ज्यादा देर तक नहीं चलती। क बल्कि जो बात मन में बस जाती है वह जीवन भर काम आती है। इसलिए इन बातों को ध्यान में रखते हुए आज बच्चों को शारीरिक दंड नहीं दिया जाता अपितु मानसिक संस्करण द्वारा पढ़ाया जाता है। इसके लिए निन्दा, प्रशंसा तथा इनाम आदि माध्यमों का सहारा लिया जाता है।

खण्ड - घ

ऋतुओं के बदलते रूप

भारत ऐसा देश है मेरा
जहाँ बदल - बदल कर पड़ता
हर ऋतु का फेरा।

भारत ~~संस~~ ऐसा देश है जहाँ पर छः ऋतुएँ बारी- बारी से अपने रंग दिखाती हैं। भारत की ऋतुएँ हैं :- वर्षा, ~~फ्~~ ग्रीष्म, शिशिर, हेमंत, पतझर और बसंत। सब ऋतुओं की अपनी अपनी शोभा है। लेकिन सबसे लुभावनी ऋतु है ~~र~~ बसंत जब कि भारत के मंच पर बसंत ऋतु का आगमन होता है तो सारी सृष्टि इसका स्वागत करने के लिए तैयार होती है। फूलों से लदे खेत ऐसे लगते ~~हैं~~ हैं जैसे बसंत का स्वागत करने के लिए कुदरत ने ~~बड़ी~~ बड़ी चाह से हार तैयार किए हों। सरसों के पीले फूल बहुत आकर्षक लगते हैं। चारों तरफ ~~हरि~~ हरियाली की चादर फैल जाती है। गर्मी की ऋतु का इंतज़ार भी बड़ी व्यग्रता से किया जाता है। बच्चे तो आम व लीची खाने के लिए ही गर्मी का इंतज़ार करते हैं।

गर्मी तो हर मनुष्य के पसीने छुड़ा देती है।
पसीने से भीगे लोग वर्षा ऋतु का इंतज़ार करते हैं।
तड़पते धरती के कलेजे को ठंडक प्रदान करने
के लिए वर्षा ऋतु आती है। बच्चे, जीव जंतु, मोर
खूब नाचते हैं। अंग - अंग में नयी शक्ति प्रदान
करने के लिए वर्षा ऋतु अपने रंग दिखाती है।
फिर शिशिर ऋतु भाव सर्दी की ऋतु आती है।
ठिठुरते - ठिठुरते रज़ाई में बैठकर चाय
की चुसकियों का आनंद शुरू हो जाता है।

'सर्दी आई, सर्दी आई
ठंड की पहने वर्दी आई
सबने ओढ़े मोटे कपड़े
चाहे दुबले चाहे पतले।'

फिर बसंत ऋतु आती है लेकिन आज प्रदूषण,
वनों की कटाई आदि के कारण मौसम चक्र टूटता जा
रहा है। बेवक्त बरसातें, ठंड में अधिक ठंड तथा
गर्मी में अधिक गर्मी सब प्रदूषण के ही परिणाम हैं।
अगर ऐसा ही चलता रहा तो शीघ्र ही मानव जीवन
संकट में पड़ जाएगा। कई प्रजातियाँ तो अधिक

ठंड या गर्मी सहन न करने की वजह से विलुप्त हो चुकी हैं। नये - नये रोग उत्पन्न हो रहे हैं। जलजले, सैलाब आदि मौसम चक्र में परिवर्तन आने के ही दुष्परिणाम हैं। अतः मनुष्य को चाहिए कि वह सब ऋतुओं का भरपूर आनंद मानें और अपने नये तौर - तरीकों से प्रकृति को न सताये। इसीमें मानव जीवन व अन्य जन - जातियों की भलाई है।

18

परीक्षा भवन

- - शहर।

4 मार्च 2013

~~शुभप्रभात~~ प्रिय मित्र राम,

शुभप्रभात।

P.T.O

18 विज्ञान की ~~भलाई~~ पढ़ाई को बढ़ावा देने के लिए विद्यालय की ओर से किए गये उपायों के बारे में अपने मित्र को पत्र लिखिए।

परीक्षा भवन,
--- शहर।
5 मार्च 2013
प्रिय मित्र दिनेश,
शुभ प्रभात।

दिनेश, ~~मैं~~ तुमने मुझे एक बार बताया था तुम्हारी सबसे अधिक रूचि विज्ञान विषय में है। इसके लिए तुम समय-समय पर नयी पुस्तकें ~~तथा~~ पढ़ते रहते हो। हमारे स्कूल में ~~एक~~ आजकल विज्ञान की ओर ~~विद्यार्थियों~~ छात्रों की ~~बड़~~ बढ़ती हुई रूचि को देखते हुए हमारे मुख्याध्यापक जी ने भौतिकी के क्षेत्र में उन्नति करने के लिए भौतिक लैब बनवाई है जिसका उद्घाटन प्रोफेसर यशपाल से करवाया गया है। समय-समय पर ~~नये~~ बड़े-बड़े प्रोफेसरों और हमारे क्षेत्र के विज्ञानिकों को हमें कुछ न कुछ जानकारी देने के लिए बुलाया जाता है। हमारे स्कूल में एक विज्ञान मेले तथा स्कूली स्तर पर एक परीक्षा का आयोजन किया जाएगा। जिसका

पाठ्यक्रम हमारी किताब की ही सिलेबस नहीं बल्कि अन्य पुस्तकों में से डाला जाएगा। जीतने वाले को ~~छा~~ 100 रु प्रति मास छात्रवृत्ति दी जाएगी।

बच्चों को प्रोत्साहित करने के लिए अन्य परीक्षाओं का भी आयोजन किया ~~जाए~~ जाएगा जिनमें पूरे प्रांत या देश के बच्चों को शामिल किया जाएगा। विज्ञान पर आधारित नये-नये चित्र तथा नमूने कक्षाओं में लगाये गये हैं।

मुझे आशा है तुम्हें यह सुनकर बहुत अच्छा लगा होगा और तुम्हें भी कुछ न कुछ नया पता लगा होगा। शेष बातचीत मिलने पर। अपने माता-पिता को मेरा प्रणाम कहना।

तुम्हारा मित्र,

क, ख, ग।